

अनमोल दावा

यदि गुलाब की तरह खिलना चाहते हैं, तो कॉटों के साथ तालमेल की कला सीखनी होगी।

मोदी सरकार के खिलाफ विपक्ष का ढीला गठबंधन, नहीं दिख सहा 'इडिया' गुट का जोशो-खरोश

लोकसभा चुनाव के महेनजर जिस तरह विपक्षी दल एकजुट हुए थे और एक व्यापक आंदोलन की रणनीति बनी थी, उससे लगा था कि वह सत्तापक्ष के लिए बड़ी चुनौती साभित होगा। मगर अब जब चुनाव की घोषणा हो गई और नामांकन के पहले चारण की प्रक्रिया भी पूरी हो गई है, इस गठबंधन में त्वरा नजर नहीं आ रही है। खासकर सीटों के बंटवारे को लेकर गतिरोध पूरी तरह खट्टन हीं हो गया है।

दिल्ली, उत्तर प्रदेश और हरियाणा में तो सीटों को लेकर पहले ही समझौता हो गया था, मगर विहार में गतिरोध जारी था। अब काफी मंथन के बाद वहां समझौता हो पाया है। राष्ट्रीय जनता दल छब्बीस, कांग्रेस नौ और पांच सीटों पर वाम दल चुनाव लड़ेगा। मगर अभी महाराष्ट्र का मामला लटका हुआ है। गठबंधन में नजर आ रही यह शिथिलता किसी रणनीति का हिस्सा नहीं मानी जा सकती। इसमें राजनीतिक दलों की अपनी स्थिति को लेकर हिचक अधिक समझ आती है।

दरअसल, जिस जोशो-खरोश के साथ विपक्षी दलों ने मिल कर छिंडियां गठबंधन बनाया था, वह धीरे-धीरे कम्पो घड़ता गया। इस गठबंधन के अगुआ नीतीश कुमार खुद भाजपा के साथ जा मिले, फिर ममता बनर्जी ने अकेले चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी।

इस तरह दलों के अलग-अलग रास्ता अपनाने से गठबंधन की जो कुछ रेलियां प्रस्तावित थीं, वे भी अभी तक नहीं हो पाई हैं। इससे यह भी जाहिर होता है कि सीटों के बंटवारे को लेकर जो फार्मूला पहले ही तय हो जाना चाहिए था, वह अभी तक अंतिम रूप नहीं ले पाया है, जिसकी वजह से ये अड़चनें बनी हुई हैं। माना जा रहा था कि गठबंधन के दल इस फार्मूले पर सहमत हो जाएंगे कि जिस सीट पर जिसकी जीत की उम्मीद अधिक है, उस पर उसी के प्रत्याशी को उतारा जाएगा।

मगर शायद यह फार्मूला सर्वमान्य नहीं हो पाया। इसी वजह से कुछ सीटों को लेकर अभी तक खंचितान देखी जा रही है। इससे गठबंधन के बारे में गलत संदेश ही जा रहा है। सीटों के निर्धारण में जिनती देर होगी, उतना ही कम समय उन पर उतारे जाने वाले प्रत्याशियों को प्रचार के लिए मिल पाएगा। राजनीति में फैसलों के समय की भी बड़ी अहमियत होती है। सही समय पर फैसले नहीं लिए जाते, तो उसका फायदा आखिरकार विपक्षी दल को मिलता है। इसलिए गठबंधन दलों को अब ज्यादा समय तक सीटों के बंटवारे को लेकर हिचक पाले रखना या मंथन नहीं करना चाहिए।

हालांकि कई बार राजनीति के तहत भी राजनीतिक दल ऐसा दिखाने के प्रयास करते हैं कि वे कमज़ोर या अनिर्णय की स्थिति में हैं। इस तरह वे प्रतिद्वंद्वी की चालों को भांपने का प्रयास करते हैं। मगर गठबंधन दल अब उस दौर से आगे निकल आए हैं। सत्तापक्ष ने ज्यादातर जगहों पर अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। उसके सहयोगी दलों के साथ समीकरण भी स्पष्ट है। ऐसे में अब जरूरत है, तो विषयी गठबंधन दलों को अपने स्थानीय स्वार्थों और पार्टी नेताओं के दबाव से बाहर निकल कर सत्ता समान के लिए कमर कसने की।

हालांकि गठबंधन के लिए इसे एक अच्छा संकेत माना जा सकता है कि सीटों के बंटवारे में देर जरूर हो रही है, पर अभी तक उनमें एकजुटा बनी हुई है। ऐसा कोई बड़ा विवाद या विवोह अभी तक नजर नहीं आया है। यह सत्तापक्ष के लिए अपने किसी चुनौती से कम नहीं।



मैथ



कर्क



तुला



मकर

आज आपका दिन लाभदायक रहने वाला है। सरकारी कर्मचारियों के बेतन के में बढ़ी होने की संभावना है। आज व्यापार के क्षेत्र में आपको अतिथि लाभ होता है। विद्यार्थी आज किसी नए प्रोफेक्ट को शुरू करने के लिए उत्कृष्ट रहे। आपको कोई बड़ा खुशबूती मिलने के योग बन रहे हैं।

आज आपका दिन शानदार रहेगा। सिंगर को जो गाना लोगों को आपनी पसंद आयेगा। आपके समानों को आज नयी डुगने मिलेंगी। भारतीय दोस्तों की सलाह आपको कुछ काम आयेगी। कांसेक्शन में आपको आत्मविश्वास आपकी सफलता का मार्ग दिखाएंगे।

आज आपका दिन लाभदायक रहने वाला है। आज एक कृष्णार्थ काम ज्ञान दिखाएंगे। साप्तर्षीय इंस्टीट्यूट आज किसी यारंगे को पूरा करने में सहायता होगी। दोप्यर रिश्ते में ही रही गतिविहारों आज खुली होंगी, जिससे आपके राजनीतिक विकास की तरीया कर कर्हे हैं, तो उन्हें सफलता मिलने के योग बन रहे हैं।

आज आपका दिन खुशहाल रहने वाला है। आज किसी कर्मी दोस्त की मदद से आपको अच्छी जीवनसाधी की मनसंदेश का खाना बनायेगा। आज अपने कम्पटीशन की तरीया कर कर्हे हैं, तो उन्हें सफलता मिलने के योग बन रहे हैं।

विश्व पटल पर नाचा का नाक ऊंचाःदाता मंदरा की हो पूजा

विजय मिश्रा



भारत का हृदय प्रांत है छत्तीसगढ़। यह एक उत्तर प्रिय राज्य होने के बाल्य काल से ही हुए पढ़ाई लियाँ हो से दूर नाचा गमत की ओर अधिक रुचि लेने लगे। उन दिनों नाच का स्तर सतही हुआ करता था, इससे वित्तित दुलार के मन में नाच को आप से खास बनाने की जिज़ जा बीज फूट पड़ा और उन्होंने रातवाली नाच पाठी संस्था गढ़ा कर दी।

नाच का गढ़ नाच उनके आप से क्षमता की चाहत है। अनादिकाल से ऐसे उत्सवों पर उक्सास की अधिकारी छत्तीसगढ़ के कलाकार नाचा -गमत को अपनी विश्वास से करते हैं। अब यह जीवन की उत्तरी ओर आ रहे हैं।

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति का अधिक अंग नाचा गमत का उड़व मराता सैनिकों के माझेंजन साधन 'खड़े साज गमत' को माना जाता है। इस विधि में पुरुष कलाकार ही स्टीवी पाठी की भूमिका निभाते हैं, जिन्हें 'खड़े नाच' की जाता है। नाचा से ही नाचा शब्द 'नाच' की उत्तरी हुई है।

ऐसे नाच गमत को गांव के चौपाल से विश्व के कपाल पर महिमा मिलत करने में दात मंदरा जी का साथ कर दिया गया। एक सूखे छत्तीसगढ़ इसीलिए उहें नाच के नाम से सम्पर्कित करता है। हालांकि दात जी की जिज़ जो गांव की गौव प्राप्त है। नाचा का गढ़ नाच उनके सिर पर ऐसा साथ लगता है तो और उस नाच को नियन्ति करने की चाहत में दुलार सिंह का विवाह 14 वर्ष की उम्र में भौतिकी गांव की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

दुलार के नाम से नाचा उनके कपाल पर लगता है। इसकी जीवन विहारी की गमत की जीवन विहारी हुई है।

